Shri T. N. Singh: I dare not disagree with you, madam.

Mr. Deputy-Speaker: I shall put all the cut motions to the House.

(The cut motions were put and negatived.)

Mr. Deputy-Speaker: The question is:

"That the respective sums not exceeding the amounts shown in the fourth column of the order paper, be granted to the President, to complete the sums necessary to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1967, in respect of the heads of demands entered in the second column thereof against Demands Nos. 65, 66 and 131 relating to the Ministry of Iron and Steel."

The motion was adopted.

Mr. Deputy-Speaker Shall we take up the Home Ministry tomorrow?

Some hon. Members: Yes.

17.55 hrs.

*CRITICISM OF INDIAN HISTORY

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद): अध्यक्ष महोदय, जिस चीज पर हमें चर्चा करनी है वह संयुक्त राष्ट्र (यूनाइटेड नेशंस) के तहत यूनेस्को ने जो मनुष्य का इतिहास लिखने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आयोग बनाया था और जो उसने किताब छापी उस पर है। यह है मनुष्य जाति के इतिहास की पहली जिल्द जो प्राग इतिहास और सभ्यता की शुरुआत से संबंध रखती है। इसको छापा है इतिहास के अन्तर्राष्ट्रीय आयोग ने लेकिन इसकी जिम्मेदारी एक तो संयुक्त राष्ट्र, दूसरे संयुक्त राष्ट्र के द्वारा बनायी गयी संस्था यूनेस्को और तीसरे भारत सरकार पर पड़ती है। यहां तक कि इस अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास आयोग के साथ पत्र-व्यवहार करने वालों में डाक्टर राधाकृष्णन तक का नाम है। यह मैंने जिम्मेदारी की बात की।

अब सबसे पहले यह बताऊं कि शायद किसी शास्त्र पर यह पहली बार बहस हो रही है इस लोक सभा में और इसलिए अगर कुछ बुनियादी बातों की तरफ ध्यान देकर मन्त्री महोदय और यह सरकार आगे से कुछ दिशा परिवर्तन करे तो बड़ा अच्छा होगा। कोई छोटी इधर उधर की बातों का मुझको जवाब नहीं चाहिए।

आखिर को इतिहास में जब गलती हो जाती है लिखने में, समझने में, तो उसके कितने भयंकर परिणाम होते हैं? आखिर इतिहास है क्या? यह है अतीत का बोध। जो कुछ पहले हो चुका है उसको किस ढंग से समझते हैं—अधूरा, पूरा, गलत, सही, इतिहास है अतीत का बोध। और अतीत का बोध भविष्य और वर्तमान का निर्माता भी हुआ करता है। अगर गलत समझे हैं तो गलत ढंग से वर्तमान और भविष्य बनता है और खास तौर से मैं एक छोटी सी मिसाल देकर बताता हूं। मन्दिर टूटे मध्यकालीन युग में। अब उसको इतिहास में लिखा जाता है। अगर सिर्फ इतना ही लिख दिया जाय कि मुसलमान विजेताओं ने आकर मन्दिर तोड़े तो यह बात सही जरूर है। लेकिन अधूरी सही है, सिर्फ एक पहलू है। तो इतिहास एक गुस्सा भर बनकर रह जाता है। लेकिन अगर उसके साथ साथ यह भी रखा जाय जो आधे सच को थोड़ा बहुत पूरा बनाता है कि उस वक्त के हमारे पुरखे कितने नालायक

---

*Half-an-hour Discussion.

थे कि वह परदेसी आक्रमणकारियों को रोक नहीं पाये तो इतिहास किसी हद तक पूरा बन जाता है और फिर इतिहास एक दर्द के रूप में आ जाता है और वह दर्द एसा होता है कि हम फैसला करते हैं कि आगे कभी एसी बात होने नहीं देंगे और यह नहीं सोचते कि आज जो हमारे बीच में बसने वाले मुसलमान हैं, अखिर तो वह हमारे भूतपूर्व हिन्दू हैं, उनका कोई हाथ नहीं था उस वाक्ये में, उनसे बदला न निकालकर के जो कि एक बिलकुल अहमक काम होगा हम यह कोशिश करते हैं कि इतिहास को गुस्से के रूप में न देखें बल्कि दर्द के रूप में देखें।

अब इस सिलसिले में किताब में जो भूल हुई है, देखने में मुमकिन है छोटी लगे पर मैं आपको बताऊं कि भारत के इतिहास की गैर-समझ अपने खुद के लेखकों और परदेशी लेखकों की कितनी होती है, कुछ मिसालें देकर बताता हूं, एक तो यहां पर जो कुछ होता है वह कहीं किसी की नकल है, चीन की नकल, मिश्र की नकल या उर और चाल्डी की नकल, नकल वह जरूर होनी चाहिए। नतीजा होता है कि इस संयुक्त राष्ट्र के छपे इतिहास के लेखक लेनर्ड वूली साहब कहते हैं कि जब हम सांची के महान स्तूप के उत्तरी दरावजें जैसे ढांचे देखते हैं तो यह मुश्किल हो जाता है न सोचना कि इसकी प्रेरणा चीन के लकड़ी के स्थापत्य कला से आयी है। अब इस पर मैं आपको अध्यक्ष महोदय, एक बड़ी मजेदार बात बताऊं कि भारत के किसी इतिहास कमीशन के मेम्बर ने नहीं, सदस्य ने नहीं जिनकी जिम्मेदारी है एसी गलतियों को दूर करने की, डाक्टर राधाकृष्णन् या उनके जैसे किसी आदमी ने नहीं, बल्कि एक रूसी विद्वान प्रोफसर डीयकनाफ आरईलिन ने इस गलती की तरफ ध्यान खींचा।

17.59 hrs.

[SHRI SONAWANE *in the Chair*]

और तब लेनर्ड वूली साहब एक छोटे से नोट में लिखते हैं कि जहां तक चीनी संबंध का ताल्लुक है प्रोफसर ईलन ने यह बात दिखाई जरूर, पर फिर भी मुझे यह कहना पड़ता है कि मेरे दिमाग पर यह असर पड़ा है, एसके लिए सबूत कुछ नहीं लेकिन यह असर देखा है कि किताब में लिखने लायक है। अब यह है इनका इतिहास। सांची में स्तूप बनता है, उसकी प्रेरणा चीन से आती है, संयुक्त राष्ट्र के इस इतिहास में, उस पर रूसी विद्वान प्रोफसर ईलन इस गलती को बताता है। उसके ऊपर यह विद्वोन प्रोफेसर वूली लिखते हैं कि मेरे दिमाग पर असर है, लिखने लायक है चाहे उसके लिए सबूत न हों ....(**व्यवधान**)...दिमाग खराब तो डाक्टर सिंह आप कहते हैं, लेकिन इतिहास लिखने वाले क्या विदेशी क्या देशी एसे ही खराब दिमाग के हैं। नतीजा यह होता है कि आज भारत के बच्चे बच्चे के दिमाग में यह परिभाषा है कि भारत में जो कुछ हुआ उसका कहीं न कहीं असर या उसकी प्रेरणा किसी दूसरी जगह से आयी है। यहां तक कि ये लोग इतने आगे चले जाते हैं कि इस पुस्तक में एक और पुस्तक का नाम लिया गया है और जिस का कि नाम सुन कर ही आप हंसेंगे, अचरज करोगे और दर्द भी आयेगा। इस पुस्तक का नाम है "पाकिस्तान के ५००० वर्ष"।

एक माननीय सदस्य : पागल है।

एक माननीय सदस्य : पागल नहीं है बदमाश है।

डा० राम मनोहर लोहिया : वह शब्द कहना आप को जंचता है। यह जितने पाश्चात लेखक हैं वह चाहते हैं कि पाकिस्तान को पुरानेपन का एक मुलम्मा दे दिया जाय। वह इलाका हड़प्पा और मोहजदारो का जो एक सभ्यता का पुराने सभ्यता के एक अंग का प्रकाश था उस को पाकिस्तान का नाम दे कर के पाकिस्तान की जड़ें मजबूत की जायें यह है उनका मतलब। चाहे वह उस को कला कहें, इतिहास कहें चाहे और कुछ कहें। तो फिर ऐसे इंगलिस्तान की 20 लाख वर्ष का इतिहास ले लिया जाय। इंगलिस्तान

[डा० राम मनोहर लोहिया]

का 20 लाख वर्ष का और हिन्दुस्तान का भी लिख दिया जाय 3 अरब वर्ष का क्योंकि वह पृथ्वी का इतिहास है। आखिर को यह भी पृथ्वी का एक अंश है। लेकिन आप जानते हैं उस के नतीजे कितने खतरनाक होंगे?

उस तरीके से इन किताब में एक और बात कही गई है जिस पर साम्प्रदायिक लोगों का ध्यान नहीं गया है। एक तरीके से अच्छा ही है और वह ऋगवेद के बारे में है। ऋगवेद कितना पुराना है इस तफसील में मैं नहीं पड़ता हालांकि मैं इस बात को जानता हूं कि आज से समझो 1900 और 1200 मसीह से पहले अर्थात आज से 3100 वर्ष पहले हिन्दुस्तान में कविता कोई खास नहीं थी यह बात मैं मानने के लिए तैयार नहीं हूं। इस में मिश्र की कविता का जिक्र है चीन की कविता का जिक्र है। जहां तक संगीत का सवाल है संगीत के मामले में मैं माने लेता हूं। इस किताब में सभी चीजों का मिलाजुला वर्णन है लेकिन कविता को ले कर के बिलकुल साफ इस किताब में लिख दिया गया ख़ कि 3100 वर्ष पहले की कविता को भारत के संबंध में हम लिख नहीं सकते क्योंकि उस के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं और जहां तक ऋगवेद का सवाल है यह हजरत फरमाते हैं कि आज से ईसा मसीह के 1500 वर्ष पहले आर्य लोग यहां आये। एक तो यह आर्य, अनार्य, द्रविड़, मंगोल, बहुत हद तक गप्प है। चागला साहब मुझे जवाब मत देना शुरू कर देना बिना इस बातको समझे हुए। उन को भी दोष नहीं दूंगा। यह एक परम्परा चली आ रही है। यह समझना कि आज से कोई 3500 वर्ष पहले आर्य लोग यहां आये और उस के 500-700 वर्ष में यह सब कविता वगैरह बनाने में लगे तब जाकर ऋगवेद को यह शख्स कहते हैं कि ऋगवेद की जमी हुई, मंजी हुई कविता कोई आज से 2700 या 2800 वर्ष पहले कही जायेगी।

डा० मा० श्री० अणे: (नागपुर): आरोयनमें सिद्ध किया है कि ऋगवेद के मंत्र खिस्त पूर्व 6000 वर्ष पुराने लिखे गए।

डा० राम मनोहर लोहिया: अब यह तो आप का कहना हैं लेकिन आप मेहरबानी कर के चागला साहब को यह बतला दें कि उनकी जिम्मेदारी और डा० राधाकृष्णन् जिस इतिहास के साथ संबंद्ध रखते हैं उन की जिम्मेदारी से यह किताब छपी है जिस किताब में कि ऋगवद की कविता को जगह नहीं दी गई क्योंकि उस कविता को वह मानते ही नहीं कि इतनी पुरानी है। वह नई है और उस के लिए उन्होंने बहुत तरह के तर्क भी दिये हैं। मैं खाली एक बात को लेना चाहता हूं और बातों में मैं नहीं जाना चाहता। कविता पुरानी है उसा का प्रमाण अलग से है लेकिन इस संबंध में मैं ने कौशम्बी की खुदाई करने वाले अध्यापक गोबर्धन राय शर्मा को बहुत खोद खाद करके खोजखाज करके एक लेख लिखने के लिए कहा है। उन्होंने मेरे पास यह भेजा है। उस में कई हिस्से हैं। बहुत तो तकनीकी हैं। उनका एक वाक्य खाली पढ़ कर मैं आप को सुनाता हूं। एक तरीका निकला है रेडियो कारबन। रेडियो कारबन का तरीका ऐसा है जिससे पुरानी चीजों की उम्र पता चल जाया करती है। वह कहते हैं कि जब कौशम्बी रपट छपी थी उस के बाद से रेडियो कारबन निकाला है और वह तरीका जब इन सब पर इस्तेमाल किया गया जो कि कुम्हारी के बर्तन वगैरह होते हैं, कौशम्बी में मिले हैं तो दावे के साथ कहा जा सकता है कि यह बर्तन कुम्हारी के 2035 ईसा मसीह से पहले से लेकर 640 ईसा मसीह तक के हैं। अब कौशम्बी या उसी की तरह और जितनी खुदाई और खोज हुई है उन के ऊपर विदेशी लोगों का तो कोई असर उन के दिमागों पर पड़ा नहीं। खुद अपने यहां के इतिहासकार उस को ज्यादा महत्व नहीं

देते तो अगर आप चाहें तो यह नोट मैं आप को भेज देता हूं और इसको सदन पटल पर रख दिया जाय। शायद इस की मदद से भारत सरकार यूनाइटड नेशंस से भी कोई बातचीत कर सके।

अब असल मामला यह है कि इस तिहास वगैरह में वैसे भी एक चीज बहुत ज्यादा दिमाग में रहती है और वह यह कि जो कुछ भारत में हुआ वह किसी परदेशी समूह के आने से हुआ। यहां की जो बस्ती थी वह इस लायक नहीं थी कि कोई नई चीज हासिल कर ले। हमेशा कोई बाहर की बस्ती आई जिसने यह कहा। उस के लिए इस किताब में लिखा गया है कि हरप्पा में जो बड़ा जबरदस्त किला है.....

Mr. Chairman: His time is up. He should conclude in two minutes.

डा० राम मनोहर लोहिया : दो, चार मिनट दे दें तो यह बात पूरी हो जायगी। मैं अब उसका मतलब बताने के बाजाय अंग्रेजो में ही उसे पढ़ देता हूं। व यह लिखते हैं।

"The elaborate fortification of the citadels would hardly have been necessary to protect the cities against raiding parties from the mountains of Baluchistan; more probably they were intended to overawe the countryside, the assumption being that the ruler and citizens were of an alien stock which had reduced their indigenous inhabitants to the status of serfs."

यह तो इतिहासकार लिखते हैं। मुझे ज्यादा कहने की जरूरत नही। इस संबंध में मैं रूस के इतिहासकारों की तारीफ करना चाहता हूं हालांकि वह अपने खुद के देश के आर के बारे में बहुत खास अच्छे तरीके से नहीं करते हैं लेकिन मैं उन का नमस्कर करता हूं कि कम से कम पुराने इतिहास को लेकर भारत के संबंध में उन्होंने ज्यादा ज्ञान दिखाया है बनिस्बत अंग्रेजों के और उन के जैसे दूसरे पाश्चात्य इतिहासकारों के यहां यह प्रोफसर आई० एम० डाएकोनीफ और जी० एफ इलयिन लिखते हैं :—

Prof. I. M. Diakonoff and Prof. G. F. Ilyin note that no conclusive proof exists that the ruling class was of foreign origin. The citadels may have been similar to the baronial castles of Germany in the Middle Ages."

अब उस के ऊपर सर लैनडं वूली साहब लिखते हैं कि दो सबब हैं जिससे यह साबित हो जाता है कि यह किला परदेसियों ने बनाया। किले के अन्दर जो लोग रहते थे वह परदेशी थे। एक तो नई सभ्यता आई और दूसरे यह कि पुरानी सभ्यता के ध्वंसावशेष बहुत मिलते हैं। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर इसी तरीके से जर्मनी, रूस ऑर इंगलिस्तान में खोज की जाय तो यह पता चलेगा कि एक ही सभ्यता कई अंशों में आपह में लड़इयों के ध्वंसावशेष मिल जायेंगे उन के साथ ही अन्तःप्रेरणा से नई सभ्यता बनती है यह इतिहासकार कभी मानने को तयार नहीं होते कि हिन्दुस्तान में कोई अन्तःकरण से प्रेरणा आती है जिससे नयापन हो जाता है। इस संबंध में मैं आप से कहना चाहता हूं कि इन्हीं जैसे इतिहासकारों ने भारत को सभी इतिहास विद्या को बिल्कुल नष्ट कर दिया है क्योंकि यहां का इतिहासकार बड़ा से बड़ा अब तक जो चल रहा है वह इस बात को मान कर चलता है कि अगर यहां पर पुनर्जीवन होता है तो कोई न कोई परदेशी के शारीरिक सम्पर्क से पुनर्जीवन होता है। किसी अफगान से होता है किसी मुगल से होता है किसी अंग्रेज से होता है और नतीजा होता है कि आजकल वक्ताओं में यह भी देखा गया है बार बार कहने की प्रवृत्ति आ गई है कि हमारा आनोखा देश है यह सब को अपा लिया करता है। सब के साथ समन्वय कर लिया करता है। हमारा तो विवि-

[डा० राम मनोहर लोहिया]

धता में एकता वाला देश है। आज आप महानुभाव लोगों से मैं यह कहना चाहता हूं कि इस इतिहास की जहरीली धारा ने हमारे दिमाग को कुछ ऐसा बना डाला है कि वर्तमान राजनीति में लगा हुआ हिन्दुस्तान सोचता है कि हम तो प्रगतिशील हैं, आने दो किसी बाहर वाले को। जीत लेगा तो हमारा क्या बिगड़ेगा एक दफा जीत लेगा और बाद में हमारे अन्दर जो एक बहुत जबरदस्त सांस्कृतिक अमृत है उस के सबब से हम उसको सांस्कृतिक रूप से जीत लग अपने में खपा लेंगे। अपने में यह खपा लेने की बात के सम्बन्ध में मैं यह कहना चाहता हूं कि यह इतिहास की धारा बिलकुल खत्म होनी चाहिये। समन्वय दो तरह का होता है। एक दास का समन्वय और एक स्वामी का समन्वय। पिछले हजार वर्ष के इतिहास से हिन्दुस्तान ने स्वामी का समन्वय नहीं सीखा वह एक दास का समन्वय रहा है।

इस सम्बन्ध में मैं खाली परदेशियों को ही दोष नहीं देता हूं। उन के सबब से जितने भी इतिहासकार हैं, वे उसी जहर में बिलकुल घुल जाते हैं। आज भारत में दो इतिहास के स्कूल हैं एक डा० तारा चंद का और एक डा० मजूमदार का और ये दोनों के दोनों इसी समन्वय धारा के हैं, विविधता धारा क हैं। भारत क्या है, उसको भूल कर भारत के जो विभिन्न अंग हैं, उन की तरफ निगाह चली जाती है।

जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि नई सभ्यता कहां से आई, हमेशा हमारा पुनर्जीवन होता है। कभी राजा राममोहन राय पुनर्जीवन करते हैं, कभी मानसिंह और अब्दुल फ़ज़ल पुनर्जीवन करते हैं, कभी उसके पहले गजनी और ग़ौरी पुनर्जीवन करते हैं। लेकिन यह पुनर्जीवन अगले आने वाले परदेशियों के सामने कभी टिक नहीं पाता है। इस लिये मैं आप से निवेदन करूंगा कि इतिहास के इस विषय के ऊपर इस सरकार को गम्भीरता से सोच विचार करना चाहिए। इस बारे में लोक सभा में आधे घंटे की बहस हो रही है। यह तो ऐसा विषय है जिस पर दो तीन दिन की बहस होनी चाहिये, क्योंकि यह मिजो का मामला है, यह नागा का मामला है, यह काश्मीर का मामला है....

श्री श्यामलाल सर्राफ (जम्मू तथा काश्मीर) : माननीय सदस्य रेजोल्यूशन ले आये।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं प्रस्ताव तो लाऊं, लेकिन माननीय सदस्य जानते हैं कि मेरे प्रस्तावों का क्या होता है।

आज जितनी भी बाते चल रही हैं—मिजो, नागा काश्मीर, या और आदिवासियों के मामले उन के पीछे वही इतिहास का जहर है: संस्कृतियों को लड़ाना, आर्य, अनार्य, मंगोल, द्रविड़ की खिचड़ी पकाना, कहना कि पहले ये थे । इस के लिए कोई सुबुत नहीं है। खाली एक छोटी सी भाषा की गवाही पर यह सब इमारत खड़ी की गई है। आप देख रहे हैं कि क्या क्या नतीजा निकलता है। सारी दुनिया की तरफ़ से खड़ी की गई जमात, युनाइटिड नेशन्ज, संयुक्त राष्ट्र, की तरफ़ से यह इतिहास की किताब निकलती है। मैं चागला साहब से निवेदन करना चाहता हूं कि वह मुझे जवाब देने की कोशिश न करें।

श्री श्यामलाल सर्राफ : माननीय सदस्य उनका जवाब तो सुन।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं पहले से उनको कह देता हूं ताकि उन को याद रहे। मुझ अपने लिए जवाब नहीं चाहिये। मैं चाहता हूं कि इतिहास और गणित, इन दो के मामले में वह कुछ करें। इन्हीं दो के ऊपर आज का भारत बनेगा या बिगड़ेगा। इतिहास अतीत का बोध है। अगर हमने अपने भूत को

ठीक से जाना और पहचाना नहीं और अपने बच्चों को ठीक से सिखाया नहीं, तो यह देश कभी भी एक अच्छा और सुखी नहीं हो सकता है। गणित विज्ञान का आधार है, जो कि आज लोगों को—लोगों से मेरा मतलब रूस और अमरीका से है—चन्द्रमा पर ले जाता है। हमारे विश्वविद्यालयों में इतिहास और गणित, ये दोनों, बिल्कुल मरे हुए पड़े हैं। उनको सुधारने की कुछ कोशिश की जाये, इतना ही मुझे कहना है।

श्री शिवमूर्ति स्वामी (कोप्पल) : सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय से यह दर्याफ्त करना चाहता हूं कि क्या यू० एन० ओ० ने यह इतिहास लिखने से पूर्व भारत सरकार से कोई मालूमात या रिकार्डज मांगे थे; यदि हां, तो क्या आजादी के बाद अंग्रेजों के लिखे हुए पुराने इतिहास के बदले एक राष्ट्रीय इतिहास लिखने के लिए मिनिस्ट्री ने कोई सेल बनाया या नहीं और अगर बनाया, तो क्या उसके अनुसंधान और संशोधन का कोई रिकार्ड यू० एन० ओ० को भेज दिया गया था या नहीं।

Shri Kapur Singh (Ludhiana): Are Government aware that during British days, as in a free India, indigenous Indian learning and scholarship are not only deemed inferior but irrelevant, for modern humanistic studies? If so, do Government propose to appoint a competent commission to examine this whole question to suggest and recommend remedial measures?

Some hon. Members *rose*—

Mr. Chaiman: The hon. Minister.

Shri R. S. Pandey (Guna): Sir, only one question.

Mr. Chairman: No. Only those who have given prior notice are allowed to put questions.

Shri R. S. Pandey After all, it is a question.

Mr. Chairman: Order, order. I can not allow it. Now the Minister.

Shri R. S. Pandey: What is wrong if you allow one or two questions?

Mr. Chairman: There is nothing wrong, but the rules do not provide for it... (*interruptions*) Please co-operate with me in keeping the decorum of the House.

Shri Rajeshwar Patel (Hajipur): Not allowing us to ask questions is not maintaining the decorum of the House.

Mr. Chairman: If the hon. Member had given prior notice, he would have been entitled to ask questions.

Shri R. S. Pandey: Sir, I rise on a point of order.

Mr. Chairman: Order, order. The rule is very clear on this point. He would resume his seat..... (*interruptions*)

श्री बागड़ी (हिसार) एक एक सवाल पूछ लेने दीजिये। क्या फ़र्क पड़ता है?

Mr. Chairman: Every day whenever half an hour discussion is raised, this rule is followed by the Speaker and the Deputy-Speaker. So, there should not be any deviation from this rule.

Shri R. S. Pandey: Sir, with your permission a question can be asked. After all, it is a very important subject. It has got something to do with our history. Now that Dr. Ram Manohar Lohia has raised that question, Sir, you may allow one question to Dr. Aney and one question to me.... (*Interruptions*).

Mr. Chairman: Order, order. I would request hon. Members to listen to me.... (*Interruptions*)

Shri R. S. Pandey: It is the privilege of the mermbers to ask questions

Mr. Chairman: The rule says:

"There shall be no ormal motion before the House nor voting. The member who has given notice may make a short statement and the Minister concerned shall reply shortly. Any member who has previously intimated to the Speaker may be permitted to ask a question for the purpose of further elucidating any matters of fact."

So, this is very clear.

श्री बागड़ी : अणे सा॒हब को सवाल पूछने की इजाजत दी जाये ।

श्री राम सहाय पाण्डेय : इतिहास के सम्बन्ध में माननीय लोहिया जी ने जो प्रश्न उठाया है, वह बड़ा अच्छा है . . .

Mr. Chairman: It is for the Rules Committee to amend the rules if it wants the Members to ask questions without previous intimation. As long as the rule stands, I cannot permit it.

श्री बागड़ी : अगर सदन चाहे तो ? सारा सदन यह चाहता है—सारे सदन की यह राय है कि सवाल पूछने का मौका दिया जाये । मैं तरमीम पेश करता हूं कि माननीय सदस्यों को सवाल पूछने की इजाजत दी जाये ।

Mr. Chairman: Unless there is a motion for suspending the rule we can not deviate from the rule. Now, the hon. Minister.

Shri K. C. Pant (Nainital): Sir, I beg to move:

"That rule 55(5) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha in its application to this Half an Hour Discussion in so far as it relates to previous intimation being given to ask questions, by suspended."

Mr. Chairman: The question is:

"That rule 55(5) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha in its application to this Half an Hour Discussion in so far as it relates to previous intimation being given to ask questions, be suspended."

The motion was adopted.

Mr. Chairman: Now Dr. Aney.

Dr. M. S. Aney: A few years ago I brought to the notice of the House, the history being re-written by the United Nations. Shri Majumdar, a former member of that Committee, spoke in his speech to the Bhandarkar Oriental Institute of Poona saying that the history of India is being written in a horrible way by the U.N.O experts. In view of that, I wanted to know whether the Government would take any steps to see that the proper perspective of Indian history was being put before them. I gave that speech to Shri Ayyangar, the previous Speaker on his asking for it and I expected that he would look into it. I do not know what happened afterwards.

श्री राम सहाय पाण्डेय : इतिहास किसी भी राष्ट्र के लिये एक दर्पण के समान है । कोई भी राष्ट्र उस दर्पण में अपने स्वरूप को देख सकता है । दुर्भाग्य की बात यह रही कि दो सौ बरस के अंग्रजों के साम्राज्य के कारण हमारे इतिहास, हमारी संस्कृति, हमारे राष्ट्र की पृष्ठभूमि और उसके व्यक्तित्व को बहुत तोड़ा मरोड़ा गया है । उन्होंने अपनी सुविधा के अनुसार इतिहास को लिखा । इन डेढ़ सौ, दो सौ बरसों में हमारे विद्यार्थियों को विदेशियों द्वारा लिखा गया इतिहास पढ़ाया गया । मैं जानना चाहता हूं कि आज के इस संदर्भ में, जबकि राष्ट्र को स्वतंत्र हुए अठारह बरस हो चके हैं, उस काल में जो इतिहास लिखा जा चुका है, उस को सामने रख कर, उसकी खोज कर के, अनुसन्धान करके, अन्वेषण कर के, क्या मंत्रालय की तरफ़ से किसी नये साहित्य की रचना का कोई प्रयत्न किया जा रहा है, ताकि हम अपनी सनातन

तथा जितनी भी पुरानी थाती रही है, जो अनुभूतियां, जो व्यक्तित्व देश का रहा है, उसका सही का सही चित्रण संसार के सामने रख सकें। उस को सामने रख कर एक नये साहित्य, एक नये इतिहास की रचना के सम्बन्ध में मैं जानना चाहता हूं कि क्या प्रयत्न किये जा रहे हैं।

The Minister of Education (Shri M. C. Chagla): Mr. Chairman, in the heat and dust of political battles it is very refreshing that we are now striking an academic note by discussing the question of history. I am very grateful to Dr. Lohia for having raised this question because it is very important that from time to time we should withdraw from these political contests and think of more important subjects like history, culture and art.

Dr. Lohia has asked the question: What is history? It is a fascinating question and everybody interested in history would like to give an answer to it. History is recapturing the past, but it is not merely recapturing the past. A historian does not merely write about the facts of the past. A historian also assesses the past. He interprets the past. He passes judgement on the past. Even in writing about the facts and the data he can be selective. He may omit certain facts. Therefore, the role of the historian is very important. It is wrong to think of history as merely a catalogue of events of the past. The greater the historian the greater his interpretation.

And may I say this to Dr. Lohia that interpretation will always differ? One historian having the same facts will interpret them in one way and another historian will interpret them in another way. Very often the interpretation may not be acceptable to us; but, as I said, it is the right of a historian, if he is honest to his vocation, to interpret the facts in his own light.

Having said that, may I, first of all, clear the misapprehension in the mind of my hon. friend, Dr. Lohia? He said that the responsibility of this history, which is, *History of Mankind: Cultural and Scientific Development*, is firstly on the UNO, secondly on the UNESCO and thirdly on the Government of India. This is entirely an erroneous statement. And I will point it out.

What happened was that the UNESCO appointed an international commission of historians, the most distinguished historians of the world according to UNESCO, and it is quite clear that the responsibility for writing this history was not on the UNESCO but on the international commission. I make this clear from what has been stated in the Foreword to this volume by the Director General of UNESCO. It says:—

> "The author of this history is not UNESCO; it is the international commission which since 1950 has directed this venture in complete intellectual independence."

Shri Sivamurthi Swamy: What authority has appointed this international commission?

Shri M. C. Chagla: UNESCO can appoint any commission. They appoint various commissions.

डा० राम मनोहर लोहिया : इसको किस ने किया, इस आयोग को किसने बनाया ?

Shri M. C. Chagla: It goes on:—

> "It is to the commission, therefore, and to it alone that the full credit for this work is due. It also bears the sole responsibility for its scientific work."

May I add, full credit and, if there is discredit, it is solely the discredit of this commission?

Then, Professor Carneiro, who was the President of the Commission, clearly takes the stand in the Preface,

[Shri M. C. Chagla]

to Volume One of his book that the author-editors will be fully responsible for the text.

Let me point out what happened. We had three Indians on this commission—Dr. Bhabha, Professor Mazumdar, a very distinguished historian—he was the Vice-President—and Sardar Panikkar. When the text was prepared, it was sent to our national commission in this country. It was sent to all the national commissions. We submited this text to Professor Mazumdar, the Director General of Archaeology and Shri Lal, who was the Assistant Director General. These distinguished gentlemen in India submitted the critcisms of the text. They violently differed from some of the interpretations put upon the past by these authors.

I must say in fairness to the authors that, although in the text they adhered to their view, they incorporated in the notes the criticism submitted by Prof. Majumdar and others, so that anybody reading this history not only gets the text according to the authors but also the criticisms of the text wherever they differed from it. So where does the responsibility of the Government of India come in? Where does the responsibility of the Ministry of Education come in? Here is an International Commission working in intellectual independence and, as it has been pointed out, consisting of eminent historians; they prepare the history of the past, the pre-historic period and it is submitted not to us, but to the International Commission; we send it to the proper authorities and their criticism is forwarded to the Commission and that criticism is incorporated in the history. Therefore, I beg to submit to this House and to Dr. Lohia that it is entirely wrong to blame the Government of India or the Ministry of Education for not having taken adequate steps to see that any misinterpretation of Indian history does not figure in so important a book. The responsibility was entirely of this Commission. Even so, the Government of India did do all that it could to see that our objections to any misinterpretation of our history are incorporated in this volume. I have no time; otherwise, I would point out the number of notes where Prof. Majumdar's view is set out. The author says that he does not agree. After all, he is an author; he is entitled to his view; we may not agree with him. This is the position.

Shri Bhagwat Jha Azad (Bhagalpur): I can understand honest interpretation but not mischievous interpretation. We hold the Government of India responsible for this. The Government of India knew that here was a body which giving a wrong interpretation of history—differing not honestly but mischievously—and they should have protested. It is not enough to say that it was an honest body. What is honest in that body if it tries to tarnish the fair history of our country? We want to know from the Government as to what they have done in this regard? It is not enough to say that Prof. Majumdar's criticism is incorporated. The Government should have made efforts to drop that passage from the history.

Shri Kapur Singh (Ludhiana): The hon. Member who has moved this motion has demonstrated before this House that these historians are not only ignorant but might say things for ulterior purposes. Merely by calling them eminent and distinguished, the Minister will not be able to meet the point which the hon. Member has raised.

Shri M. C. Chagla: As a pointed out, Government did all that was possible. The texts were submitted to distinguished and eminent Indian historians; their criticism was invited and it was forwarded to the International Commission and the International Commission has incorporated it. We were not responsible for its publication; the UNESCO was not respon-

sible; the UNESCO, having appointed an International Commission, left it to the authors and on that International Commission we were represented by three distinguished Indians.

Shri Bhagwat Jha Azad: The Government of India is paying a handsome amount to them and this body gets the money from them and they get this money to write a history against us. As Government, what have they done? Why did they not protest? If Prof. Majumdar failed, why did the Government fail? We want to know this.

Shri M. C. Chagla: As I said, we did all that we could. I do not know what more we could have done to point out the errors into which the historians had fallen. The criticism is also part of this history. Anybody who reads this history will not only read the text which may be a libel on our culture, but will also read in the notes the comments made by the distinguished historians like Prof. Majumdar, so that any fair-minded reader will know both sides of the picture before he draws any conclusion. What more Government of India could do? We did not publish this book.

Dr. Ram Manohar Lohia has raised the question of the age of the *Rigveda.* I agree that this author takes the view that the *Rigveda* does not go beyond 1200 years B.C. It is quite contrary to what all of us know and feel strongly, namely that the *Rigveda* is a very ancient book, one of the finest symbols of our culture, a great contribution to our literature and poetry. Here also, in the note it has been pointed out what our view about this is. As I have said, again, the error has been pointed out, and the criticism of that error has been incorporated in the notes.

Dr. Ram Manohar Lohia has also talked about *Five Thousand Years of Pakistan*. Pakistan came into existence only ninteen years ago. As I said in the Security Council, before nineteen years, the only culture was Indian culture, the only history was Indian history and the only background was Indian background. No Pakistani can look back to his own country beyond nineteen years. If he tries to look back, he can only look back to Indian cuture, to Indian history, and may I add, to Indian forefathers. Therefore, it is ridiculous for any historian to talk of five thousand years of Pakistan. I do not know who has written this book. I have not come across it.

डा० राम मनोहर लोहिया : आप नाम चाहते हैं, तो मैं नाम बता देता हूं ।

R. E. M. Wheeler: Five Thousand Years of Pakistan—An Archaeological Outline, London, 1950.

यह बहुत बड़े आर्कयोलोजिस्ट हैं, कोई मामूली आदमी नहीं हैं । ऐसा आदमी न जाने आपको क्या क्या सिखा सकता है । अब जवाब न दीजिये, फिर दीजिये । कभी लम्बी बहस यहां हो तो मजा आयेगा ।

Shri Kapur Singh: We had kept him here for a number of years. Even after the Partition he was here. He has written the book entitled *Five Thousand Years of Pakistan*. He was a former Director-General of Archaeology here. He is the same fellow.

Shri M. C. Chagla: We are very proud of our ancient civilisation. It goes back thousands of years. I agree with what my hon. friend Shri R. S. Pandey has said that it is time that our own people write our own history and give a correct interpretation about the past.

Shri Sham Lal Saraf: But how soon?

Shri M. C. Chagla: I am coming to that. I have always felt that one of the misfortunes of our country is that most of our history books have been written by foreigners who have injected poison into our country, and have given a totally false reading of what happened.

[Shri M. C. Chagla]

Now, I shall tell you what we are doing. That is more to the point. We have set up a board of distinguished people who are re-writing Indian history, from the point of view of India, from the point of view of our national integration, from the point of view of our culture. These books are not ready yet, but some of them will be ready by the end of this year. My view is my hope is that these books will be sent to the various States and they will be translated into our different Indian languages and will be taught to the students. There is nothing more important in education than to give to the young boy and the young girl in school a correct view of his or her own country, of his or her own history, and of his or her own past. Therefore, I agree with the view that we should attach much more importance to history.

Then, take the other thing that we are doing. We have set up recently the Nehru Library and Museum where we are collecting all the books possible for the period which starts from Raja Ram Mohan Roy till the modern age. The idea is to get Indian scholars there and try to write the history of modern times. Raja Ram Mohun Roy played a very big part in our Indian history, but there is hardly any history about him. From that period down to Independence or beyond, we have had a galaxy of men who have contributed to India's Independence and India's struggle for freedom. So, there again, we are doing what we can, to promote historical study and historical scholarship. Therefore, we are doing what we can to help young people to think about the past of India and to write about India. We do not want a history which is biassed in our favour, and I do not think that we need that bias, because our history is great enough, and even an honest and fair interpretation would be sufficient to prove to ourselves and to prove to the world what a great past we have had.

But as far as this particular question about the UNESCO book is concerned, as I have said, I do not think that it is right to foist upon the Government a responsibility which is not its. It is the responsibility, not even of the UNESCO, certainly not of the UN, but it is the responsibility of this international commission.

The second book, *Ancient World*, has come out, which is from 1200 BC to 500 BC, which is much more appreciative of what India's contribution is. The first book dealt with the pre-historic period, prior to 1200 BC. The other volumes are still to come. But I assure the House that when the text comes, it will be sent to distinguished historians in India, their criticisms will be invited and these will be forwarded to the International Commission, and as in the first volume, these will be incorporated.

डा० राम मनोहर लोहिया : सभापति महोदय, दो मिनट में मैं अपनी बात कहना चाहता हूं . . . .

Mr. Chairman: The House stands adjourned to meet again at 11 A.M. tomorrow.

18:36 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, April 27, 1966/Vaisakha 7, 1888 (Saka).

GMGIPND—LS II—403 (Ai) LS—19-7-66—970.